Mesolithic Culture

Dr. Dilip Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Ancient Indian History & Archaeology,
Patna University, Patna
Paper – CC-XI, Sem. – III

मध्य पाषाण काल अंग्रेजी के Mesolithic का शाब्दिक अनुवाद है । स्तरीकरण के दृष्टिकोण से मध्य पाषाण काल उच्च पुरापाषाण काल के बाद तथा नवपाषाण काल से पूर्व आता है । प्रारंभ में इसकी स्थिति के सम्बन्ध में सम्यक ज्ञान नहीं था, परन्तु फ्रांस के Mas-d-Azil नामक स्थल पर उत्खनन के फलस्वरूप इसकी वास्तविक स्थिति के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त हुआ । इस स्थल पर मध्य पाषाणिक उद्द्योग एवं उपकरण मध्यवर्ती स्तर से प्राप्त हुए थे। इसमें नीचे के स्तर से उच्च पुरापाषाण कालीन उद्द्योग के उपकरण मिले और ऊपर के स्तर से नवपाषाण कालीन उपकरण मिले थे । अधिक अनुसंधान के बाद ज्ञात हुआ की मध्य पाषाण कालीन उद्द्योग का विकास उच्च पुरापाषाण कालीन उद्द्योग से हुआ। अतः इस उद्द्योग को Palaeolithic & Neolithic दोनों का अन्तवर्ती कहा गया है ।

वातावरण या पर्यावरण की दृष्टि से यह उद्द्योग नये उद्द्योग के प्रारम्भ का सूचक है । Palaeolithic काल के अंत के पश्चात् 8000 B.C. के आस - पास सम्पूर्ण विश्व में भारी जलवायु परिवर्तन हुए। प्रतिनुतन काल में जिन भूभागों पर बर्फ की चादरें बिछी थी वें क्रमशः संकुचित होने लगे तथा जिस क्षेत्र में अधिक वर्षा होती थी वहाँ कम वर्षा काल की स्थिति पैदा होने लगी । इन परिवर्तनों ने पृथ्वी के धरातल की रुपरेखा को बदल दिया । प्रतिनुतन काल में जिन क्षेत्रों में बर्फ की चादरें जमीं थी वहाँ पर घास के मैदान हो गये तथा जहाँ अतिवर्षा होती थी

वहाँ घने जंगलों का विकास होने लगा । नूतन काल के इस परिवर्तनों ने पृथ्वी के धरातल पर विचरण करने वाले प्राणियों को भी समुचित रूप से प्रभावित किया । शीत जलवायु में रहने वाले विशालकाय मैमथ, रेन्डियर विलुप्त होने लगे तथा छोटे आकार के घास चरने वाले जानवर जैसे विविध प्रकार के हिरण, भेड़ - बकरी का बहुलता से विकास होने लगा इन बदलते हुए परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित करने के लिए मानव में अनेक परिवर्तन करने पड़े । इससे सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन उसके उपकरणों में हुआ।

मध्यपाषाण काल के उपकरण पहले की अपेक्षा एकदम छोटे हो जाते है और उसका निर्माण छोटे संकरे और पतले ब्लेडो पर सीमित हो जाता है । ये लघु पाषाण उपकरण Microlithic tools के नाम से विख्यात है । इन छोटे उपकरणों का उपयोग मिश्रित उपकरण के रूप में लकड़ी के हत्थे में एक श्रृंखला पर लगाकर इसका व्यवहार किया जाता था। एक श्रंखला में लगाये गये ब्लेड या flake में से एक के टूट जाने पर उसकी जगह तुरंत दूसरा blade लगा सकते थे जिससे सम्पूर्ण उपकरण द्वारा काम होने लगता था। लघु पाषाण उपकरण को दो भागों में विभाजित किया गया है, यथा - अज्यायमितिक लघु पाषाण उपकरण तथा ज्यायमितिक लघु पाषाण उपकरण । अज्यायमितिक लघु पाषाण उपकरण वर्ग के सामानांतर बहु वाले ब्लेड भुथरे पाशर्व ब्लेड, scraper, bourer, burin, point, lunates आदि सम्मिलित थे । दुसरे वर्ग के उपकरणों में इन सभी उपकरणों के अतिरिक्त त्रिभुज तथा Trapeze का समावेश है ।

भारत - पाकिस्तान क्षेत्र में भी नूतन काल या Holocene में आरम्भ से मध्य पाषाण कालीन सांस्कृतिक सामग्रियों में बृद्धि दिखाई पड़ती है। मध्यपाषाणिक स्थलों की संख्या पूर्ववर्ती Palaeolithic स्थलों की अपेक्षा अधिक है और ये सभी स्थल अधिक सुरक्षित अवस्था में पाई गई है । इस काल में विभिन्न प्रकार के वातावरण या पर्यावरण को आवास के लिए उपयोग प्रारंभ

हुआ यथा भारत के मध्यवर्ती भाग में स्थित शिलाश्रय समूह गुजरात एवं राजस्थान के बालू के टीले वाला क्षेत्र, पश्चिमी समुद्र तट के टापू, पहाड़ी भूभाग तथा तमिलनाडु के समुद्रतटीय क्षेत्र जिसे स्थानीय भाषा में टेरी कहा जाता है । आवास दो एकड़ से अधिक क्षेत्र में विकसित है और आवासीय जमावों की मोटाई 1 मीटर से अधिक होने लगती है । आवास के साक्ष्यों में पकी मिट्टी के टुकड़े से बने पत्थर के फर्श, Post holes आदि सम्मिलित है । उपरोक्त आवासीय विशेषताये तथा बड़े शवाधान के साक्ष्य से जान आबादी की एक प्रथा तथा स्थानबद्ध जीवन यापन का संकेत मिलता है ।

भारत में गंगा घाटी क्षेत्र में सराय नहराय तथा अन्य स्थलों से पक्की ईटों के टुकड़ों से निर्मित फर्श तथा post - holes के साक्ष्य मिले है । मध्य प्रदेश के सोनघाटी में स्थित बागोर द्वितीय स्थल से post holes के प्रमाण मिले है । भीमबैठका के शिलाश्रय से एक stone wall का साक्ष्य मिला है । इसके अतिरिक्त लघु पाषाण उपकरण की संख्या में अधिक बृद्धि दिखाई पड़ती है । उपकरणों के साथ कुछ स्थलों में यथा मध्य भारत के पुरास्थलों में galending stone मिले है जो हिरण के सींग से बने है । अंगूठी जिसका व्यवहार आभूषण के रूप में किया गया, गंगा घाटी के स्थलों से प्राप्त हुए है। शवाधान के साक्ष्य गुजरात में स्थित लंघनाज, राजस्थान स्थित बाघोर, मध्यप्रदेश स्थित भीमबैठका, उतरप्रदेश स्थित मिर्जापुर का शैलाश्रय स्थल तथा गंगा घाटी का मध्यपाषाणिक स्थल है ।

मृतकों को दफ़नाने की विधि में क्षेत्रीय भिन्नता दिखलाई पड़ता है । गंगा घाटी के स्थलों के शवाधानों में मृतकों को हिरण के सींग से बने हुए curve आभूषण तथा गले में ring का हार पहने हुए दफनाया गया है। मृतक के दाहिने हाथ को पेट पर रखा गया है । भीमबैठका में मृतकों को पत्थरों के पट्टे पर रख कर दफनाया गया है । Galending stone, bone tools आदि

समाधी सामग्री के रूप में रखे पाए गये है । मिर्जापुर शैलाश्रय के एक शवाधान में पत्थर को काटकर तकिये के समान सर के निचे रखने के लिए बनाया गया है । शैलाश्रयों में भित्तिचित्र के नमूने मिले जो इस काल की महत्वपूर्ण उपलब्धि है । पश्चिमी तथा मध्यवर्ती भूभागों से प्राप्त सांस्कृतिक सामग्रियों की प्रचुरता तथा क्षेत्रीय समानता के आधार पर पांच संस्कृतियों की पहचान की गयी है यथा कैमूर या मिर्जापुर संस्कृति, सराय नहराय संस्कृति, बगौर संस्कृति, लंघनाज संस्कृति, भीमबैठका संस्कृति आदि । इन सभी क्षेत्रों से प्राप्त सांस्कृतिक सामग्रियों के आधार पर मध्यपाषाण कालीन आवासीय स्वरुप तथा आर्थिक व्यवस्था के बारे में जानकारी मिलती है । इसके अतिरिक्त इस काल के विभिन्न प्रकार के धार्मिक विश्वासों के साक्ष्य भी मिलते है ।

इन सभी साक्ष्यों के आधार पर पहली बार मध्यपाषाण कालीन सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा कलात्मक कृति के बारे में जानकारी मिलती है ।